प्रश्न :- चीन के नुकसान या चीन को अलग करने के लिए भू-संतुलन नहीं हो रहा है। इस सबक को अच्छी तरह से समझना चाहिए, जब भारत जैसे देश अपनी भविष्य की रणनीति की योजना बनाते हैं।

उत्तर :- चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के साथ एक नई वैश्विक शक्ति बनकर उभर रहा है। भारत चीन सम्बंध इस गलवान घाटी पर विवाद के कारण छद्म युद्ध जैसे हालातो से गुजर रहे हैं।

लेकिन चीन को अलग-थलग करने की नीति को निम्न कारणों से उचित कहना मुश्किल प्रतीत होता है -

⇒ भारत के पड़ोसी देशों पाकिस्तान, श्रीलंका और नेपाल के साथ चीन के सकारात्मक सम्बंध विकसित हो रहे हैं। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा और अन्य निवेश इसके सम्बंधों को पड़ोसियों के साथ और मधुर बना रहे हैं।

⇒ छोटे पड़ोसी देशों की को ऋण उपलब्ध कराने के चीन की नीति के चलते शायद ही कोई देश उसका विरोध करे।

⇒ दक्षिण चीन सागर में चीन के बढ़ते प्रभाव के चलते भी उसकी शक्ति में भारी वृद्धि हुई है।

⇒ चीन अनेक देशों को निर्यात आपूर्ति करने वाले बड़े देशों में शामिल है।

इसके अलावा Quad समूह में शामिल देशों जैसे - आस्ट्रेलिया और जापान के साथ चीन के सम्बंध अभी भी सामान्य बने हुए हैं ऐसे में वे शायद ही उसका विरोध करें।

उपरोक्त कारणों की वजह से शायद ही कोई देश चीन के सामने खुलकर विरोध में उतरे। इसलिए चीन को अलग

अलग करने की नीति सफल होती नहीं प्रतीत होती है।
ऐसी स्थिति में निम्न कदम उठाए जा सकते हैं-

↳ क्योंकि चीन भारत के सबसे पुराने पड़ोसियों में से एक है ऐसे में उसके साथ संतुलित सम्बंध स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

↳ चीन - अमेरिका के मध्य उत्पन्न हो रहे शीत युद्ध के हालातों के चलते भारत उन देशों के लिए अच्छा विकल्प बन सकता है जो न तो चीन के साथ जाना चाहते हैं और न ही अमेरिका के।

↳ भारत को चीन पर अपनी आर्थिक निर्भरता कम करते हुए आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करना चाहिए।

↳ चीन को अलग-थलग करने के बजाय भारत को अन्य देशों जैसे :- आसियान, आस्ट्रेलिया, जापान आदि के साथ अपने सम्बंधों को मजबूत बनाने की कोशिश करना चाहिए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत की भावी रणनीति चीन को अलग - थलग करने के स्थान पर विभिन्न पड़ोसियों के साथ शांति और सौहार्द स्थापित करते हुए द्विपक्षीय संबंधों को भी मजबूती प्रदान करने की होनी चाहिए।

Q: चीन के नुकसान या चीन को अलग करने के लिए भू-संतुलन नहीं हो रहा है। इस सबक को अच्छी तरह से समझना चाहिए। जब भारत जैसे देश अपने भविष्यकी रणनीति की योजना बनाते हैं।

Ans: 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' नारे के साथ शांति के लिए पंचशील सिद्धांत (1954) पर हस्ताक्षर करने वाले दो पड़ौसी देश वर्तमान में विभिन्न मंचों पर एक-दूसरे के खिलाफ खड़े हुए हैं। इन सबका प्रमुख कारण चीन की विस्तारवादी नीति है, जो हालिया वर्षों की घटनाओं - डोकलाम विवाद, गलवान घाटी विवाद से दृष्टिगोचर होती है। इन सबके अतिरिक्त CPEC, BRI, सीमा-विवाद, QUAD में भारत की सदस्यता, UN सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध आदि कारण दोनों देशों के संबंधों में स्थायित्व में बड़ी बाधाएँ हैं।

चीन ने स्वयं को एशिया का नेता स्थापित करने के लिए अपनी आर्थिक एकाधिकार की नीति एवं राजनीतिक कूटनीति के द्वारा एशियाई देशों के हितों को प्रभावित किया है।

1) बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) द्वारा एशियाई देशों में सामरिक महत्व के स्थलों का विकास किया है।

2) पाकिस्तान में CPEC तथा रक्षा सहयोग द्वारा हितों को प्रभावित किया है।

3) नेपाल में राजतंत्र की समाप्ति के बाद राजनीतिक रिक्तता के बाद समग्र आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों में वृद्धि कर भारत के प्रभाव को स्थिर करने का प्रयास किया।

4) बांग्लादेश, म्यांमार तथा श्रीलंका आदि देशों में ऋणजाल द्वारा अपनी सामरिक नीति लागू कर वहाँ अपने नौसैनिक

अड्डों को स्थापित किया है।

5) वर्तमान में वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगभग 40% आपूर्तिकर्ता के रूप में स्वयं को स्थापित कर अपने आर्थिक दावे को मजबूत किया है।

भारत को अपने भविष्य की रणनीति बनाते समय चीन के साथ अपने प्राचीन ऐतिहासिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नेबर फर्स्ट नीति, विभिन्न देशों के साथ 2+2 नीति, इंडो-पैसिफिक समुद्री सहयोग पर बल, पर बल देने की आवश्यकता है। भारत को अपनी प्राचीन 'मौसम परियोजना' को यथार्थ रूप देने की आवश्यकता है। विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक सहयोग, डिफेंस, अंतरिक्ष सहयोग तथा कनेक्टिविटी बढ़ाने से बाजार एवं अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी संभव है। आवश्यकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को Make in India, 'आत्मनिर्भर भारत' के अनुकूल ढालकर राष्ट्र को विकासशील से विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा किया जाये।

Q चीन के नुकसान या चीन को अलग करने के लिए पूर्ण संतुलन नहीं हो रहा है इस सबक को अच्छी तरह से समझना चाहिए, जब भारत जैसे देश अपनी भविष्य की रणनीति की योजना बनाते है।

Ans :- वर्ष 1991 मे आर्थिक उदारीकरण का दौर शुरु होने के करीब एक दशक बाद उसके कुछ सार्थक नतीजे दिखने लगे लेकिन इसी दौर मे चीन ने एक बड़ी तस्वीर की कल्पना की जो नवाचार, उत्पादकता, अनुसंधान और विकास पर आधारित थी। इसी बूते उसने खुद को दुनिया की कार्यशाला के रुप मे स्थापित किया। दूसरी ओर हमने देश मे बाजार तो खड़ा किया लेकिन वह आयातित सामग्री पर ही निर्भर था। लिहाजा फिलहाल कुछ हद तक चीन से व्यापार जारी रखना हमारी मजबूरी भी है।

आज दुनिया के अधिकांश देशो के लोग चीनी वस्तुओं के बहिष्कार पर अड़े है कई लोगो ने देशो ने इस दिशा मे कदम भी उठाया है पूरी दुनिया इस पर चिंतित है! आज विश्व अर्थव्यवस्था का पाँचवा हिस्सा है जो दुनिया भर मे 40% सामग्रियो की आपूर्ति करता है। उसका बहुत कुछ संदेह के घेरे मे है लेकिन हमें यह भी समझना होगा कि बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ आपस मे जुड़ी हुयी है। भारत और चीन दोनो इंजन है! तथा विकास के संचालक है व दोनो देश अगले 50 वर्षो तक आगे बढ़ने की क्षमता रखते है।

आगे की राह :-

विनिर्माण के क्षेत्र मे आगे बढ़ते हुए भारत को घरेलू बाजार मे अपेक्षित बदलाव लाने होंगे। तथा उन उत्पादों और सेवाओं की पहचान करनी होगी जहाँ तक वह केवल आयात पर निर्भर है। भारत को विनिर्माण क्षेत्र को तकनीकी रूप से सक्षम बनाकर "Make in india" की सार्थकता सिद्ध करनी होगी साथ ही आसियान देशो को भारतीय हितो के अनुकूल काम करने के लिए विश्वास मे लेने का प्रयास करना होगा तभी look east policy और act east policy भी प्रभावी परिणाम दे पाने वाली साबित होगी।